सायनेटिक्स प्रतिमान के द्वारा सृजनात्मकता का विकास

सीमा शर्मा*

सृजनात्मकता बालकों में निहित विशिष्ट गुण है। इस गुण का विकास किया जाना आवश्यक है। शिक्षक को इस बात से परिचित होना चाहिए कि सृजनशील बालक स्वतंत्र चिंतन तथा स्वतंत्र निर्णय-शक्ति वाले होते हैं। वे जटिल समस्याओं के समाधान में रुचि लेते हैं तथा उच्च स्तर की प्रतिक्रिया करते हैं। प्रत्येक बालक में सृजनात्मक शक्ति होती है। अतः सृजनात्मकता की पहचान करना व उसे सही दिशा प्रदान करना शिक्षक का कार्य है व प्रत्येक विद्यालय में इस हेतु उचित वातावरण तैयार करना आवश्यक है। भावी शिक्षकों को अपेक्षित शिक्षण प्रक्रिया के लिए तैयार करने हेतु शिक्षण प्रतिमानों की भूमिका पर अनेक शोध किए जा चुके हैं। शिक्षण प्रतिमानों को मुख्य रूप से सूचना प्रक्रम प्रतिमान, वैयक्तिक प्रतिमान, व्यावहारिक प्रतिमान एवं सामाजिक अंतर्किया प्रतिमान नामक श्रेणी में बाँटा गया है। वैयक्तिक प्रतिमान के अंतर्गत सायनेटिक्स प्रतिमान आता है, जिसका उद्देश्य सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक समस्या समाधान की योग्यता का विकास करना है। प्रस्तुत लेख में सायनेटिक्स प्रतिमान व शिक्षण प्रक्रिया में उसके उपयोग पर चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत शिक्षक विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने एवं दिशानिर्देशित करने के लिए अपने ज्ञान एवं अनुभवों तथा विद्यार्थियों की सहभागिता लेकर एक विशिष्ट वातावरण का सृजन करता है। छात्रों की अधिगम प्रक्रिया निर्देशित एवं सुविधाजनक होने से विद्यार्थियों की उपलब्धियों में मात्रात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि होती है।

वर्तमान में ऐसा अनुभव किया जा रहा है कि शिक्षण के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को वांछित स्तर तक प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं। शोध अध्ययनों से भी यह ज्ञात होता है कि वर्तमान शैक्षिक परिवेश में परंपरागत

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, आर.एल.एस. शिक्षा महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)

शिक्षण विधियों में सुधार की आवश्यकता है। परंपरागत शिक्षण विधि को विभिन्न प्रकार के शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति एवं पाठ्य वस्तुओं के शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाता है जबकि उद्देश्यों की प्रकृति को ध्यान में रखकर विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विज्ञान तथा अनुसंधान के युग में परंपरागत विधियों से भी बेहतर कई प्रकार की शिक्षण विधियाँ एवं प्रतिमान हैं, जो कि रटने की बजाय समझने पर बल देते हैं। परंतु इस प्रकार के नवाचारों का प्रयोग अध्यापक नहीं कर पा रहे हैं।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास हो। विश्व में शिक्षा के स्तर में तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है। इसलिए हमें भी शिक्षा के परंपरागत साधनों का उपयोग कम करके नवाचार को अपनाना होगा जिससे बालकों में रुचि, जिज्ञासा, चिंतन, सृजनात्मकता आदि का विकास हो।

सायनेटिक्स प्रतिमान

सायनेटिक्स प्रतिमान के प्रणेता विलियम जे. जे. गार्डन थे। इस प्रतिमान का प्रमुख उद्देश्य सृजनात्मकता को बढ़ाना और किसी समस्या को सृजनात्मक रूप से हल करना है।

प्रतिमान का उन्मुखीकरण

सायनेटिक्स प्रतिमान के प्रमुख लक्ष्य -

1. यह प्रतिमान समस्या समाधान क्षमता को बढ़ाता है।
2. सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाता है।
3. समानुभूति एवं अंतर्दृष्टि विकसित करता है।
4. इसका मानना है कि सृजनात्मक खोज सभी क्षेत्रों में समान होती है, जैसे-कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि। ये बौद्धिक प्रक्रिया द्वारा बढ़ायी जा सकती है।

सायनेटिक्स प्रक्रिया

1. अभी तक यह माना जाता था कि व्यक्तिगत रूप से ही सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है, कुछ नया खोजा जा सकता है, लेकिन यह सही नहीं है। समूह में भी सृजनात्मकता बढ़ायी जा सकती है, और दोनों में ही समान होती है।
2. सायनेटिक्स प्रक्रिया में सांवेगिक घटक बौद्धिक घटक से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि सांवेगिक घटक में जब सोचा जाता है तो यहाँ कोई बंदिश नहीं होती है, जबकि बौद्धिक घटक एक निश्चित पदों में होता है।
3. इस प्रक्रिया में औचित्यपूर्ण चिंतन से ज़्यादा महत्वपूर्ण अनौचित्यपूर्ण चिंतन माना जाता है।
4. तार्किक घटक से, अतार्किक घटक ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं, अर्थात् किसी समस्या के कारण सोचने से ज़्यादा, नये-नये विचार महत्वपूर्ण हैं। अतार्किक सोचते-सोचते तार्किक पर आ जाते हैं, अर्थात् अंतिम निर्णय तार्किक होता है।

सृजनात्मक चिंतन के स्तर

सृजनात्मक चिंतन के चार प्रमुख स्तर हैं–

1. *तैयारी* - इस स्तर पर विद्यार्थियों को एक विषय या समस्या दी जाती है, जिसके बारे में वह विभिन्न दिशाओं में सोचते हैं, विचार व्यक्त करते हैं।

   इसमें तीन बातें महत्वपूर्ण हैं –

   - विषय वस्तु का ज्ञान

- आवश्यकता का अनुभव
- किसी समस्या का हल खोजना

2. *अंतर्विकास* – विद्यार्थियों के मन में जो भी विचार चल रहे हैं, उसमें शिक्षक उनकी मदद करता है, विभिन्न दिशाएँ प्रदान करता है।
3. *अनुभूति* – विद्यार्थी स्वयं उस समस्या के बारे में क्या महसूस करता है?
4. *मूल्यांकन* – सामूहिक रूप से सृजनात्मक प्रक्रिया के बाद, शिक्षक व्यक्तिगत् रूप से भी विचारों को व्यक्त करता है। बाद में विद्यार्थी उस समस्या से संबंधित विचारों का मूल्यांकन करते हैं।

रूपककार क्रियाएँ– जब विचारों में समानताओं व असमानताओं की तुलना की जाती है तो उसे रूपककार क्रियाएँ कहते हैं।

(अ) इसमें मुख्य रूप से तीन सादृश्यताएँ होती हैं–

व्यक्तिगत सादृश्यता – इस सादृश्यता में शिक्षक विद्यार्थियों से किसी चीज़ की अनुभूति स्वयं करने को कहता है। यहाँ समानुभूति की बात होती है।

उदाहरण –

- यदि आप वृक्ष होते।
- यदि आप प्रधानमंत्री होते।

(ब) *सीधे सादृश्यता* – इस सादृश्यता में दो विषय पर एक साथ तुलना करने को कहा जाता है।

उदाहरण –

- स्कूल सलाद जैसा कैसे है?

(स) *द्वंद्वात्मक सादृश्यता* – इस सादृश्यता में किसी भी विषय के दो विरोधी गुणों के बारे में सोचने को कहा जाता है।

उदाहरण –

- कंप्यूटर शांत और उत्तेजित कैसे?
- एक दोस्त, दुश्मन कैसे?

सायनेटिक्स प्रतिमान की पद योजना – विलियम जे.जे. गार्डन (1961) के अनुसार सायनेटिक्स प्रतिमान में छः पद होते हैं जो इस प्रकार हैं –

पद एक – इस सोपान के अंतर्गत समस्या को पहचानकर उससे संबंधित पैराग्रफ विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए दिया जाता है ताकि परिस्थिति व वातावरण का निर्माण हो सके।

उदाहरण –

भारत एक विकासशील देश है, यहाँ की अर्थव्यवस्था को मिश्रित अर्थव्यवस्था कहा जाता है। किसी देश की अर्थव्यवस्था वहाँ उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं तथा संसाधनों पर निर्भर करती है। आधारभूत सुविधाओं में ऊर्जा, सड़कें, पानी तथा प्रशासन आदि आते हैं। श्रम की उपलब्धता तथा तकनीकी विकास को भी इसके अंतर्गत रख सकते हैं। भारत सरकार ने परिवहन के महत्त्व को देखते हुए सड़कों की तरफ ध्यान दिया है। उन्नत सड़कें ही किसी देश की अच्छी अर्थव्यवस्था की प्रतीक होती हैं। ऊर्जा की पर्याप्त उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए इसके वैकल्पिक स्त्रोतों पर विचार किया जा रहा है। कोयला, खनिज तेल तथा गैस के साथ-साथ परमाणु ऊर्जा की तरफ भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पानी आज की आधारभूत आवश्यकता है। इसके संरक्षण के प्रयास के साथ-साथ नदियों को भी जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। संसाधनों तथा आधारभूत संरचनाओं की कमी अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक होती है। आधारभूत संरचना के साथ-साथ उचित पर्यावरण का निर्माण भी

अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक होता है।

2. *पद दो* – सोपान के अंतर्गत शिक्षक पैराग्राफ के मुख्य शब्दों को लिखता है तथा उन शब्दों की तुलना किन शब्दों से की जा सकती है, यह शब्द भी शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों को प्रदान करता है।

उदाहरण –

स्वस्थ शरीर – अच्छी अर्थव्यवस्था
शिराएँ – अच्छी सड़कें
भोजन के साधन – ऊर्जा के स्रोत
रक्त – पानी
बीमारी – आधारभूत आवश्यकताओं की कमी

3. *पद तीन* – व्यक्तिगत सादृश्यता
इस सोपान के अंतर्गत विद्यार्थियों को दिए गए शब्दों की तुलना करके स्वयं सोचने को कहा जाता है।

4. *पद चार* – इस सोपान के अंतर्गत जब विद्यार्थी तुलना तथा विचार कर लेता है, तब उसे पैराग्राफ लिखने को कहा जाता है।

उदाहरण –

अच्छी अर्थव्यवस्था स्वस्थ शरीर के समान है। जिस प्रकार शिराओं की भूमिका हमारे शरीर में होती है। उसी प्रकार अच्छी सड़कें हमारी अर्थव्यवस्था में कार्य करती हैं। शरीर को ऊर्जा, भोजन के द्वारा दी जाती है। रक्त शरीर में संचार का कार्य करता है, जीने के लिए आवश्यक है। उसी प्रकार अर्थव्यवस्था में पानी भी आवश्यक है।

5. *पद पाँच* – इस सोपान में शिक्षक विद्यार्थियों से अंतर लिखने को कहता है।

उदाहरण –

अर्थव्यवस्था निर्जीव है जबकि शरीर सजीव है।

6. *पद छः* – इस सोपान में शिक्षक विद्यार्थियों से कहेगा कि अब जैसे मैंने आपको शरीर की तुलना करने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के जो शब्द दिए थे, ऐसे ही शब्द आप सोचिए कि किन शब्दों की तुलना भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रक्रिया से कर सकते हैं।

उदाहरण –

मोटर कार – अच्छी अर्थव्यवस्था
वायरिंग (इंजन) – अच्छी सड़कें
पेट्रोल – ऊर्जा के स्त्रोत
पेट्रोल – पानी
पेट्रोल की कमी – आधारभूत आवश्यकताओं में भी कमी

उपर्युक्त उदाहरणों से भी स्पष्ट है कि सायनेटिक्स प्रतिमान की सहायता से विद्यार्थी किसी समस्या या परिस्थिती के विषय में एक ही दिशा में ना सोचते हुए विभिन्न तरीकों से विभिन्न दिशाओं में सोचता है और शिक्षक हर पद में उसकी सहायता करता है, जिससे विद्यार्थी की सृजनात्मकता का विकास होता है।

शिक्षण प्रक्रिया में सायनेटिक्स प्रतिमान के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष परिणाम

(क) विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास होता है।

(ख) विद्यार्थियों में चिंतन शक्ति का विकास होता है।

(ग) विद्यार्थियों में विषय विशेष में उपलब्धि बढ़ती है। चिंता व तनाव कम होता है

तथा उनके व्यक्तित्व का विकास भी होता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सायनेटिक्स प्रतिमान का प्रयोग विद्यालयों, महाविद्यालयों, शिक्षक – प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भी किया जा सकता है।

संदर्भ

अग्रवाल. जे.सी. 2000. *शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध.* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

चौहान, एस. एस. 1979. *इनोवेशन इन टीचिंग लर्निंग प्रोसेस.* विकास पब्लिकेशन हाउस, नयी दिल्ली

जॉएस.बी. और एम.वेल. 1985. *मॉडल ऑफ़ टीचिंग,* (सेकेंड एडिशन). प्रिंटस हॉल, प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली

दीक्षित, हरिओम. 2011. *शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं में सृजनात्मकता का विकास.* लघुशोध प्रबंध, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

दुबे, अर्चना व पाटीदार महेन्द्र. 2011. ''भूमिका निर्वाह प्रतिमान के द्वारा समानुभूति का विकास'' *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* जनवरी 2011, नयी दिल्ली

सन्सनवाल, डी.एन. और सिंह, प्रभाकर. 1991. *शिक्षण प्रतिमान.* सोसायटी फ़ॉर एजुकेशन, रिसर्च एण्ड डेवेलपमेंट, बड़ौदा